17 दिसम्बर 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जिनवाणी चैनल पर

जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन

प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 18 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ऑन लाइन संगोष्ठी -2 संपन्न

सीमंधर जिनालय भीलवाड़ा द्वारा दिनांक 4 दिसम्बर 2016 को ऑन लाइन संगोष्ठी का आयोजन डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली की अध्यक्षता तथा डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुई, जिसका विषय था - 'आध्यात्मिक क्रांति का जनक समयसार'।

इस अवसर पर वक्ताओं के अन्तर्गत श्री अमितजी अरिहंत मड़ावरा, श्रीमती सरोज जैन जयपुर, डॉ. सुरभि जैन खंडवा, डॉ. अरविन्दकुमार जैन भीलवाड़ा, श्री महावीरजी चौधरी, श्रीमती सरिता चौधरी, श्री पवनजी चौधरी भीलवाड़ा, श्रीमती मालती जैन छिन्दवाड़ा, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर आदि 41 विद्वानों और साधर्मी भाई-बहिनों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त अनेक विषयों पर गहन चर्चा भी हुई। विदुषी प्रज्ञा जैन देवलाली, श्री अजयजी पीसांगन, श्री पवनजी चौधरी आदि ने विचार-विमर्श में गति प्रदान की। अन्त में राकेशजी और सुदीपजी के आलेख ने सबको प्रभावित किया, सप्रमाण नया प्रमेय भी मिला।

गोष्ठी का मंगलाचरण सुलभ जैन झांसी एवं चिद्रूप जैन मौ मंगलार्थी ने किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुरभि जैन खंडवा ने एवं संचालन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा ने किया।

ऑनलाइन संगोष्ठियों के आयोजनकर्त्ता डॉ. अरविन्दकुमारजी जैन भीलवाड़ा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों द्वारा साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में दिनांक 4 दिसम्बर को **'दर्शनशास्त्र का परिचय'** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. अनिल जैन (प्राचार्य-दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर) एवं मुख्य अतिथि डॉ. हितेन्द्र जैन (जैनदर्शन व्याख्याता-दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, सांगानेर) थे।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रतीक हरावत रिसोड एवं संयम जैन तिगोडा चुने गये। गोष्ठी का मंगलाचरण संभव जैन दिल्ली ने एवं संचालन प्रशांत पाटील व शुभम जैन ने किया।

आवश्यक सूचना

क्या आप जैन अध्यात्म का व्यवस्थित अध्ययन करना चाहते हैं ?

क्या आप हमेशा सोचते हैं कि काश आप भी पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में पांच वर्ष नियमित अध्ययन कर गुरुओं के संरक्षण में जैनदर्शन के विशेषज्ञ विद्वान बन पाते ?

अब यह 'परमागम ऑनर्स' कोर्स के माध्यम से विश्व में किसी भी शहर से घर बैठे ही संभव है।

वीतराग विज्ञान विद्यापीठ बोर्ड द्वारा प्रमाणित इस पाठ्यक्रम के मुख्य बिन्दु -

(1) जयपुर से संचालित शास्त्री पाठ्यक्रम पर आधारित है।

(2) 40 से अधिक धार्मिक ग्रंथ 5 वर्ष में सप्ताह में 2 घंटे की कक्षाओं के माध्यम से सिखाये जाते हैं।

(3) वीतराग विज्ञान पाठमालाओं से लेकर समयसारादि ग्रंथों तक सभी अनुयोगों का व्यवस्थित अध्ययन।

(4) प्रत्येक वर्ष दो सेमेस्टरों में विभाजित (प्रथम परीक्षा-जुलाई में एवं द्वितीय परीक्षा-जनवरी में)।

(5) ओपन बुक एक्जाम अर्थात् परीक्षा में किताब खोलने की अनुमति है।

(6) विश्व के किसी भी कोने से टेलिकॉन्फ्रेन्स के द्वारा कक्षायें, जिनको रिकॉर्ड करके शेयर भी किया जाता है।

(7) कोर्स फीस 500 रुपये प्रति सेमेस्टर।

(8) अभी 2016 में मुम्बई, सूरत, अमेरिका और सिंगापुर में बैच चल रहे हैं, जिसमें 250 से अधिक छात्र लाभ ले रहे हैं।

(9) अगला बैच शीघ्र ही प्रारम्भ किया जा रहा है।

(10) हर उम्र और वर्ग के आत्मार्थी आमंत्रित हैं।

एडमिशन लेने के लिये इस लिंक पर फार्म भरें -

https://goo.gl/forms/PLejJHR8R XVB0n1E2

विशेष जानकारी के लिये संपर्क करें -

parmagamhonours@gmail.com या कॉल करें -9833067741 स्वानुभूति जैन (सोम.-शनि. सायं 5.30-7.00 के बीच)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

णमोकार महामंत्र जैसे अनादि–निधन शाश्वत अचिन्त्य महिमावंत महामंत्र के साथ पता नहीं कैसी–कैसी घटनायें जोड़कर लोग उसकी महिमा को बढाने के बजाय घटाने का काम करते हैं, लौकिक कार्यों की सिद्धि हो जाने से अलौकिक महामंत्र की महिमा कैसे बढ सकती है ? और लौकिक कार्यों की सिद्ध तो पुण्य के प्रताप से होती है, सीधे मंत्रों के जाप जपने से नहीं। हाँ, यदि मंत्र जपते हुए कषायें अत्यन्त मंद रहे तो पुण्यबंध होता है।''

विज्ञान ने अब तक के अल्पकालीन स्वाध्याय में कथा–कहानियों के माध्यम से जो पढा था और विद्वानों के प्रवचनों में जो सुना था, उसके आधार पर ही उसने कल प्रश्न पूछा था, उसका कहना था –

''पुराणों की बातें मेरी समझ में बिलकुल नहीं आतीं। मैं बहुत प्रयास करता हूँ, परन्तु समाधान मिलने के बजाय आशंकाएँ ही अधिक बढती जाती हैं।''

विज्ञान का मूल प्रश्न यह था कि –''क्या पुराणों की कथाओं के अनुसार णमोकार महामंत्र के स्मरण मात्र से वस्तुत: सब संकट दूर हो जाते हैं और सब पाप नष्ट हो जाते हैं ? जैसा कि पुण्यास्रव कथाकोष में उल्लिखित इन कथाओं से स्पष्ट है –

पहली कथा में स्पष्ट उल्लेख है कि सुग्रीव के जीव ने बैल की योनि में मरणासन्न दशा में सेठ के द्वारा णमोकार मंत्र सुनकर स्वर्ग प्राप्त किया था।

दूसरी कथा में साफ–साफ कहा गया है कि चारणऋद्धिधारी ऋषियों के द्वारा प्रबोध को प्राप्त हुआ बंदर महामंत्र णमोकार के प्रभाव से दोनों लोकों में सुख भोगकर केवल पद को प्राप्त हुआ।

तीसरी कथा में चर्चा आई है कि राजा विन्ध्यकीर्ति की पुत्री विजयश्री सुलोचना के द्वारा सुनाये गये मंत्र के प्रभाव से इंद्राणी हुई।

चौथी कथा में यह कहा गया है कि वह बकरा, जिसे मरते समय चारुदत्त ने णमोकार मंत्र सुनाया, उससे वह दिव्य शरीर वाला देव हुआ।

पांचवीं कथा में आया है कि वे नाग–नागिन, जिन्हें पार्श्वकुमार ने मरणासन्न दशा में णमोकार मंत्र दिया, उससे वे धरणेन्द्र–पद्मावती हुए। (क्रमश:)

(पृष्ठ 3 का शेष...)

योग्य मानते हैं, जितनी हममें शक्ति और क्षमता है हम उसका सम्पूर्ण उपयोग अपने इसी कार्य में करना चाहते हैं – **मात्र 'आत्मकल्याण और तत्त्वप्रचार' बस !**

हम यह नहीं कहते हैं कि अन्य कार्य करने योग्य ही नहीं हैं या समाज को उनकी आवश्यकता ही नहीं है। **समाज बहुत बड़ा है और गृहस्थ की भूमिका के अनुरूप उनकी अनेकों जायज जरूरतें भी हैं, रोजगार की, लौकिक शिक्षा की, स्वास्थ्य की, शादी–विवाह की, सामाजिक कुरीतियों से लड़ने की और अन्य भी; यह सब कार्य किये जाने की आवश्यकता भी है ही न ! पर समाज में अन्य लोग भी तो हैं न ! जिनकी उन्हीं कार्यों में रुचि है और करने की क्षमता भी, वे वह कार्य करें !** हर व्यक्ति हर कार्य तो कर नहीं सकता है, तब **क्यों नहीं सभी लोग अपनी रुचि, योग्यता, क्षमता और प्राथमिकताओं के आधार पर अपने लिये कामों का चुनाव करें ?**

यदि कोई लेखक या वक्ता अस्पतालों के संचालन का काम संभाल लेगा तो क्या वह सफल हो सकेगा ? कदाचित् कर भी ले तो उसका लेखन व पठन–पाठन का कार्य कौन करेगा ? सभी के पास समय और शक्ति तो सीमित ही है न, यदि उसका अन्य स्थान पर उपयोग (अपव्यय) होगा तो उसका मूल काम होने से रह जायेगा।

शिक्षण व संस्कारों का सिंचन एक धीमी और उबाऊ सी दिखने वाली प्रक्रिया है तथा अपने प्रयासों के परिणामों का मूल्यांकन तत्काल संभव भी नहीं है, इसलिये जल्दी से जल्दी कुछ न कुछ कर दिखाने की तमन्ना रखने वाले लोगों को इसमें दिलचस्पी नहीं होती है, उन्हें तो कुछ ऐसा करने को चाहिये जिसके परिणाम आकड़ों की भाषा में तुरंत दिखाई दें, उनकी प्राथमिकता अन्य प्रकार के कार्य करने की होती है।

हमारी स्पष्ट व दृढ मान्यता है कि हमारे लिये मात्र यही कार्य, यही तत्त्वप्रचार का कार्य एकमात्र कृत्य है, यही वह सर्वोत्कृष्ट कार्य है जो तीर्थंकर और गणधरदेव एवं आचार्य व विद्वत्जन करते आये हैं, इसी में हमारा अपना और सभी भव्यजीवों का कल्याण निहित है। किस प्रकार? पढिये अगले अंक में ... (क्रमश:)

शोक समाचार

(1) चैतन्यधाम–अहमदाबाद (गुज.) के मंत्री श्री प्रतीकभाई के पिताजी **श्री चंद्रकांत डाह्यालाल शाह** का दिनांक 3 दिसम्बर 2016 को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

(2) मुम्बई निवासी श्रीमती वसुमतिबेन का दिनांक 4 दिसम्बर को शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी, सहनशील, सरल एवं परोपकारी थीं।

(3) बारां (राज.) निवासी श्री नरेन्द्रकुमार पोरवाल का दिनांक 7 दिसम्बर को 64 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री संजीवजी शास्त्री बारां के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

स्वर्ण जयंती के मायने (15)
सफलता का राज़ : स्पष्ट लक्ष्य एवं सैद्धांतिक दृढता

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

जगत के लोग परिवर्तन को प्रगति का नियामक मानते हैं।आंशिक तौर पर कहीं–कहीं यह बात सत्य भी हो सकती है; पर यह बात हर जगह लागू नहीं होती है।

इस स्वर्णजयन्ती के अवसर पर यदि हम टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सफलता के कारणों की चर्चा करें तो पायेंगे कि **परिवर्तित नहीं होना ही इसकी सफलता का मूलमंत्र है।** आज से 50 वर्ष पूर्व टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने मात्र तत्त्वप्रचार के एक सुनिश्चित लक्ष्य के साथ अपना कार्य प्रारम्भ किया और **अपने उस सुविचारित लक्ष्य पर वह आज तक उसी दृढता के साथ कायम है, अविचलित है।**

हमारी इस सफलता का एक बड़ा कारण यह भी है कि **पूज्य गुरुदेवश्री एवं टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ने युग को एक नयी दिशा दी है। उनके प्रयासों से विशाल जैन समाज के बीच आत्मार्थियों का एक ऐसा वर्ग तैयार हुआ है, जिसे मात्र यही चाहिये, मात्र अध्यात्म, मात्र आत्मा की व आत्मकल्याण की बात, अन्य कुछ भी नहीं।**

एक समय था जब यदि किसी कार्यक्रम में भीड़ जुटानी हो तो नाटकों और नाच–गानों का सहारा लिया जाता था; और तो और यदि किसी विद्वान के प्रवचन करवाये जाने हों तो उक्त कथित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर भीड़ जुटाने के प्रयास किये जाते थे और फिर पताशे के बीच कड़वी दवा के समान उक्त कार्यक्रमों के बीच कुछ समय के लिये प्रवचन करवाने का प्रयास किया जाता था। उस पर तुर्रा यह कि उस नटखट बालक की तरह, जो पताशे के बीच छुपी कड़वी दवा तो निकालकर फेंक देता है और सिर्फ पताशा खा लेता है, जनता भी उन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बीच रखे गये प्रवचन के दौरान अपनी लघु आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु यहाँ–वहाँ घूम फिर आती थी। इसप्रकार किसी भी तरह से सामान्यजन को माँ जिनवाणी की बात सुनाने–समझाने का कोई भी प्रयास सफल ही नहीं होता था।

इस बात का श्रेय एकमात्र पूज्य गुरुदेवश्री को ही जाता है कि उन्होंने ऐसा विशाल श्रोता समूह तैयार कर दिया जो मात्र आचार्यों द्वारा वर्णित मूल अध्यात्म की बात ही सुनना चाहता है अन्य कुछ नहीं। पुराने समय के विपरीत आज यह होता है कि यदि कोई अन्य कार्यक्रम (सांस्कृतिक कार्यक्रम, किसी संस्था का अधिवेशन या किसी नेता का भाषण) सफल करना हो, भीड़ जुटानी हो तो उसके साथ किसी आध्यात्मिक प्रवक्ता का प्रवचन रखना परम आवश्यक है और अब होता यह है कि प्रवचन के दौरान खचाखच भरा सभागृह उक्त कार्यक्रमों के दौरान खाली हो जाता है।

युग की इस करवट को आज सभी लोग महसूस करते हैं और यही कारण है कि **वे लोग जो अध्यात्म ग्रंथों के पठन–पाठन और आध्यात्मिक चर्चा से नितान्त परहेज ही करते थे, आज इन विषयों पर प्रवचन करने लगे हैं।**

युग के प्रवाह के इस परिवर्तन को यदि चमत्कार नहीं तो क्या कहा जाए और इस चमत्कारके पीछे जो लोग हैं, यदि वे नहीं तो 'युगपुरुष' और कौन होगा ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की इस अविचलित नीति के पीछे छुपे अनेक कारणों में से एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है कि **ट्रस्ट के कर्णधार आज भी वे ही हैं, जिन्होंने इसके उद्देश्य निर्धारित किये, रीति–नीति की रचना की और कार्यक्रम प्रारम्भ किये, वे ही आज भी इनका संचालन कर रहे हैं।** सामान्यतया होता यह है कि **संस्थाएं प्रारम्भ तो किसी एक लक्ष्य विशेष को लेकर ही होती हैं; पर उनके संस्थापकों को अपने उन लक्ष्यों के प्रति निष्ठावान, दृढ उत्तराधिकारी नहीं मिल पाते हैं। ऐसी स्थिति में संचालकों की निष्ठाएं ही बदल जाती हैं।** पहले किसी उद्देश्य विशेष के प्रति निष्ठावान व्यक्ति उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये संस्था स्थापित करता है; पर बाद में संस्था संचालन के प्रति निष्ठावान लोग संस्था के संचालन के लिये अन्य लोकप्रिय कार्यक्रम खोजने लगते हैं। **उनकी दृष्टि में संस्था का संचालन प्रमुख हो जाता है और उसका मूल उद्देश्य गौण,** उक्त प्रकार के लोगों और संस्थाओं के मामले में यह उक्ति चरितार्थ होती है कि –'चले थे हरिभजन कों, औंटन लगे कपास'। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट इस मायने में सौभाग्यशाली और अन्य संस्थाओं से अलग है कि न सिर्फ इसके संस्थापक अपने सिद्धांतों, उद्देश्यों और कार्यक्रमों पर दृढ हैं वरन् **उन्होंने अपने उत्तराधिकारियों की एक ऐसी समर्पित टीम तैयार की है जो हर मायने में उनकी अनुगामी है।** मात्र पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट ही नहीं वरन् आत्मार्थियों के इस सम्पूर्ण मिशन की ही यह विशेषता है कि उनका एक सुनिश्चित व सुस्पष्ट लक्ष्य है –'आत्मकल्याण व तत्त्वप्रचार' और वे सभी इसके प्रति समर्पित हैं।

ऐसा नहीं है कि हमें अपने इस मार्ग से भटकाने के प्रयास न किये जाते हों। न सही किसी बुरे इरादे से, सद्भावनापूर्वक ही सही; पर अनेकों ऐसे सुझाव निरंतर आते ही रहते हैं –**'समाज में यह काम करने की बड़ी जरूरत है, क्यों नहीं आप यह काम अपने हाथ में ले लेते हैं ?' या 'हमें समय के साथ बदलने की जरूरत है, आपकी धर्म की ये प्राचीन बातें अब आज की दुनिया में प्रासंगिक नहीं रह गई है'** इत्यादि।

दरअसल होता यह है कि **समाज में हम ही काम करते हुए दिखाई दते हैं, समाज को हमारी क्षमताओं पर विश्वास है इसलिये जब भी कोई यह महसूस करता है कि यह कार्य किया जाना चाहिये तो उसके दिमाग में एक ही बात आती है कि ये लोग इस काम को संभाल लें तो यह हो जाए** और इसीलिये वे हमारे पास चले आते हैं।

इसप्रकार के लोगों को यह बात समझने की जरूरत है कि हम वे लोग नहीं हैं जिन्हें तो बस कुछ न कुछ करना है, 'यह नहीं तो वह सही' या 'यह भी सही और वह भी सही' **हम करने के लिये कुछ नहीं करते, हम सिर्फ वह करते हैं जो हम करना चाहते हैं, वही करने में हमारी रुचि है, वही करने की हममे योग्यता है और हम मात्र वही कार्य अपने को करने**

(शेष पृष्ठ 2 पर ...)

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

प्रश्नपत्र-पूर्वार्ध (1 से 4 अध्याय तक)

पूर्णांक : 100 **समय : 2 घंटे**

परीक्षार्थियों हेतु निर्देश - 1. यह प्रश्नपत्र आप सामूहिक या व्यक्तिगत सुविधानुसार समय तय करके 31 दिसम्बर 2016 तक कभी भी हल कर सकते हैं। **2.** प्रश्न-पत्र हल कर मूल्यांकन हेतु उत्तर-पुस्तिका रजिस्टर्ड डाक/कोरियर द्वारा 'श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (जयपुर कार्यालय) को भेजें। **3.** 15 जनवरी के बाद जयपुर कार्यालय में प्राप्त उत्तर-पुस्तिका स्वीकार नहीं की जायेगी।

प्रश्न 1 : हाँ या नहीं में उत्तर देवें - (10)

1. संसार-दु:खों के बीजभूत मिथ्यादर्शन-मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र हैं। ( )
2. भ्रमजनित दु:ख को दूर करने का उपाय, उपवास करना है। ( )
3. नित्य निगोद में जीव, आयु पूर्ण कर पुन: वहीं जन्म ले, उसे इतरनिगोद कहते हैं। ( )
4. अरहन्तादि की स्तुति का कारण, रागादि की हीनता और ज्ञान की विशेषता है। ( )
5. यदि अपने त्रिकालस्वभाव में अहंबुद्धि आये, तब भी मरण का भय रहता है। ( )
6. दु:ख दूर करने के लिये आपा-पर का ज्ञान अवश्य होना चाहिये।( )
7. कषायों द्वारा किया गया स्थिति-अनुभाग बन्ध ही निमित्तरूप से बलवान है। ( )
8. निर्विकल्प स्वरूपाचरण में मग्न रहना, आचार्य-उपाध्याय-साधु का गौण कार्य है। ( )
9. प्रत्येक जीव को कर्म-बन्ध, अनादि-अनंत है। ( )
10. जो शास्त्र, मोहादि का निषेध न करें, वे पढने-सुनने योग्य नहीं हैं। ( )

प्रश्न 2 : निम्न शब्दों के माध्यम से रिक्त स्थान की पूर्ति करें - (20)

(संसारी, मंगल, अघातिकर्म, आयु, शरीर, सुख-दु:ख, अरहंत, परमौदारिक, वीतराग-विज्ञान, बाह्य-सामग्री, भावकर्म, चारित्रमोह, कर्मोदय, मोक्ष, वेदनीयकर्म, मिथ्यादर्शन, दर्शनमोह)

1. .....स्वयं मंगलरूप होने से .....को करनेवाला है।
2. .....के निमित्त से आत्मा को बाह्य .....का सम्बन्ध बनता है।
3. ..... का उदय समाप्त होते ही अनेक उपाय करने पर भी ..... का सम्बन्ध नहीं रहता।
4. ..... के उदय से ..... के कारणों का संयोग होता है।
5. द्रव्यकर्म के निमित्त से जीव के जो मिथ्यात्व-क्रोधादिरूप परिणाम होते हैं, वे ..... है।
6. ..... बनते ही शरीर निगोदिया जीवों से रहित हो जाता है, उसे ..... कहते हैं।
7. ..... जीव के अनेक औदयिक भावरूप परिणमन का निमित्त-कारण ..... है।
8. सर्वथा सर्व कर्मबन्ध का अभाव होना, उसका नाम ..... है।
9. ..... के उदय से हुआ कषायभाव असंयम है।
10. ..... के उदय से हुआ जो अतत्त्वश्रद्धान, उसका नाम ..... है।

प्रश्न 3 : सही विकल्प का चुनाव करें - (15)

1. मोक्षमार्ग प्रकाशक में कुल अध्यायों की संख्या कितनी है ?
(अ) 7 (ब) 8 (स) 9 (द) 10
2. किस कर्म के उदय से आत्मशक्ति का घात होता है ?
(अ) वेदनीय (ब) अन्तराय (स) ज्ञानावरण (द) उक्त कोई नहीं
3. तीसरे अध्याय में किस विषय का निरूपण किया गया है ?
(अ) संसार-दु:ख (ब) मोक्ष-सुख (स) संसार-कारण (द) उक्त सभी
4. आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी की आयु कितनी थी ?
(अ) 27 (ब) 37 (स) 47 (द) 57
5. वीतराग-विज्ञान किस स्वरूप है ?
(अ) मंगलमय (ब) मंगलकरण (स) दोनों स्वरूप (द) दोनों नहीं
6. संसार-दु:ख के मूल कारण कौन नहीं है ?
(अ) मिथ्यादर्शन (ब) अज्ञान (स) असंयम (द) योग
7. वह कौनसा बन्ध है, जिससे कर्मवर्गणाओं की संख्या का निर्धारण होता है?
(अ) प्रकृति (ब) प्रदेश (स) स्थिति (द) अनुभाग
8. 'सामान्य अवलोकन'- यह किस शब्द का अर्थ है ?
(अ) दर्शन (ब) ज्ञान (स) सुख (द) वीर्य
9. मिथ्यात्व सहित अहंबुद्धि का चिह्न बताइये ?
(अ) 'यह मैं हूँ' (ब) 'ये मेरे हैं' (स) 'मैं यह हूँ' (द) 'मैं इनका हूँ'
10. मिथ्यादृष्टि जीव, मिथ्यात्व-कषायादि भावों को कैसा मानता है ?
(अ) कर्मोपाधिजनित (ब) अपना स्वभाव
(स) अपने विभाव (द) आकुलतासहित
11. किस प्रकार के शास्त्र सुनने योग्य हैं ?
(अ) क्षयोपशमवर्धक (ब) रिद्धि-सिद्धिदायक
(स) वीतरागता-पोषक (द) उक्त सभी
12. 'पुण्य भला है और पाप बुरा है'- ऐसा जानना किस कारण होता है ?
(अ) आस्रव (ब) बन्ध (स) संवर (द) मिथ्यादर्शन
13. मोक्षमार्ग प्रकाशक की मूल भाषा कौनसी है ?
(अ) हिन्दी (ब) ब्रज (स) ढूंढारी (द) उक्त कोई नहीं
14. 'मैं शरीर हूँ'- ऐसा जानना कौनसा मिथ्याज्ञान है ?
(अ) संशय (ब) विपर्यय (स) अनध्यवसाय (द) उक्त सभी
15. मिथ्याचारित्र होने पर क्या होता है ?
(अ) कषाय (ब) प्रमत्तयोग
(स) स्वरूपाचरणचारित्र का अभाव (द) उक्त सभी

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

भगवान श्री 1008 आदिनाथ दि. जिनबिंब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महामहोत्सव

दीवानगंज / भोपाल

प्रतिष्ठा महोत्सव बुधवार दिनांक 01 फरवरी से सोमवार 06 फरवरी 2017

कार्यालय – एच. आई. जी. 14, ओल्ड सुभाष नगर, रेल्वे क्रासिंग के सामने, भोपाल,

क्र. .....

आवास आरक्षण पत्र

फोटो

सम्पर्क सूत्र .: 9522232640/9522232641

आवास आरक्षण की अन्तिम तिथि .: 25 दिसंबर 2016

रजिस्ट्रेशन शुल्क 250/– प्रति व्यक्ति जो वापिसी योग्य है।

पात्रों को रजिस्ट्रेशन शुल्क नहीं भेजना सिर्फ फार्म भर कर भेजना अनिवार्य है।

प्रमुख व्यक्ति का नाम. : .....

पूरा पता : .....

शहर ..... जिला ..... पिनः ..... राज्यः..... देश .....

ई–मेल : ..... मो. : .....

महोत्सव पात्र : – ☐ ☐ डॉक्टर ☐

साधर्मियों का विवरण

क्र.	अन्य साधर्मीयों का नाम	पिता/पति का नाम	मोबाईल नं.	उम्र	स्त्री/पु.	भोजन व्यवस्था (हि./गु./शो.)

पहुंचने की तारीख : ..... समय : ..... वापिसी की तारीख : .....

साधन एवं उसका विवरण : – हवाई जहाज ☐ बस ☐ ट्रेन नं. ☐ स्वयं का साधन ☐

निम्नलिखित खाते में पेमेंट जमा करें :– .

SHRI 1008 AADINATH DIGAMBER JINBIMB PANCH KALYANAK PRATISHTHA MAHAMAHOTSAV SAMITI

A/c No. 57490200000015

Branch : Bank of Baroda, Diwanganj Branch

IFSC Code : BARB0DIWANG

स्वर्ण जयन्ती...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जिनश्रुत के प्रभावना योग की वो कड़ी साबित हुई है, जो जैनदर्शन/जीवन दर्शन को इस युग के अंत तक ले जाने में अविस्मरणीय रूप से स्मरण की जाती रहेगी...

अभी तक ...

तीर्थंकर महावीर के महाप्रयाण के बाद मानवीय कमजोरियों ने वैज्ञानिक कही जाने वाली विचारधारा को भी दो भागों में विभाजित कर दिया, जिनको आज हम दिगम्बर और श्वेताम्बर के रूप में जानते हैं। कालक्रम में कमजोरियाँ भी बढती गयीं और विभाजन भी... जिसके परिणामस्वरूप वस्तुवादी दर्शन व्यक्तिवादी दर्शन के रूप में देखा जाने लगा और मठों व मंदिर के नाम के साथ जाति/व्यक्ति/सम्प्रदाय आदि जुड़ने लगे। अब वो मंदिर भगवान से भी पहले व्यक्ति/जाति/ग्रुप की याद दिलाने लगे और अपने अपने समूह में जान फूंकने के लिये जो रास्ते अपनाये गए उनसे जैनदर्शन का दूर–दूर तक कोई लेना–देना नहीं था... खासकर जैनदर्शन में अंधविश्वास की कोई जगह नहीं थी; लेकिन जन सामान्य को आकर्षित करने के लिये रागी देवी–देवताओं का, तंत्र–मंत्र आदि का बढ–चढकर प्रयोग होने लगा। जो स्तोत्र विशुद्ध देव–गुरु–धर्म के गुणानुवाद के लिये लिखे गये, उन्हें धर्मांधों द्वारा रोग नाशक व लौकि समृद्धि के रूप में प्रचारित किया जाने लगा, तो कुछ लोगों का रुझान सिर्फ धार्मिक क्रियाकाण्ड की ओर चला गया। तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित जैनधर्म की शक्ल ही बदलने लगी। जो तीर्थंकर ना किसी से डरे और ना ही किसी को डराया उनके अनुयायी ठेकेदार तरह–तरह से भक्तों को डराने लगे। वे कहने लगे तुमको 'कालसर्प योग' है, कुंडली में दोष है, कुल देवता रूठा है और भी न जाने क्या–क्या हमसे पूजा करवाओ सब ठीक हो जायेगा। कर्म सिद्धांत की मानो हत्या ही कर दी इन लोगों ने और खुद की वाह वाह में लगे रहे। हालांकि इन सब झंझावातों के बीच तत्त्वज्ञान की अध्यात्म धारा मंद गति से ही सही पर बहती रही। उस धारा को इस युग में प्राण फूंकने का काम यदि किसी ने किया है तो वो नाम है श्रीकानजीस्वामी। श्वेताम्बर सम्प्रदाय में जन्म लेने के बावजूद भी ये उनकी प्रज्ञा छैनी का ही कमाल था कि सम्प्रदाय की बेड़ियों को तोड़ते हुए दिगम्बर धर्म अपनाया और आजीवन उस धारा को आत्मसात करते हुए जन–जन को उसका मर्म समझाया।

अब...

शंखनाद हो चुका है दिव्यध्वनि के सार का तमाम हठाग्रहियों के रोकने के बाद भी समाज में छ: द्रव्य, 7 तत्त्व, 9 पदार्थ, पुण्य–पाप, कर्त्ताकर्म, चार अभाव, क्रमबद्धपर्याय आदि जैसे महत्वपूर्ण विषय चर्चा के विषय बने। लोगों ने बढ–चढकर इसका स्वागत किया। धीरे–धीरे इस तत्त्वज्ञान की धारा ने आन्दोलन का रूप ले लिया और मनीषी कह उठे ''लो रोको तूफान चला रे...पाखंडों के महल ढहाता...।''

अब जिनवाणी को जन–जन तक पहुंचाने के लिये शिविरों का आयोजन होने लगा। एक ओर वर्तमान के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान भी कानजीस्वामी की विचारधारा को अपनाने लगे तो दूसरी ओर विरोध भी जोर पकड़ने लगा; क्योंकि अशिक्षा और अंधविश्वास की जोड़ी है। इसलिये उन्हें लगने लगा कि लोग स्वाध्यायी हो जायेंगे तो हमारा क्या होगा; अत: हर संभव प्रयास किया जाने लगा कि लोग स्वाध्याय न करें और ना ही करने दें। स्वाध्याय प्रेमियों को मुनि विरोधी कहा जाने लगा, जिससे जनसामान्य में उनके प्रति द्वेष पैदा किया जा सके; लेकिन कानजीस्वामी तो स्वयं अनेक बार यह कह चुके हैं कि हम तो मुनियों के दासानुदास हैं और विरोध करने वालों का भी विरोध नहीं किया। मात्र इतना कहते थे कि वे तो भूले हुए भगवान हैं और इसी बीच इस तत्त्वधारा को बल प्रदान करने के लिये सोने पे सुहागे जैसा काम हुआ टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की स्थापना, जिसने प्रचार की लगभग सभी विधाओं में काम किया जैसे कि पाठशालाओं का संचालन, शास्त्रों का प्रकाशन, पंचकल्याणकों का आयोजन, शिविरों का संचालन और सबसे महत्वपूर्ण महाविद्यालय की स्थापना, जिसने आज सैंकड़ों शास्त्रियों का निर्माणकर समाज को समृद्ध बना दिया और ये सब हो सका डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पूरनचंदजी गोदिका के मणिकांचन संयोग द्वारा और कर्मठ सहयोग दिया तत्कालीन मनीषी बाबूभाई मेहता, नेमीचंदजी पाटनी आदि ने। समय–समय पर तत्त्वज्ञान से छात्रों का सिंचन किया बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', पण्डित ज्ञानचंदजी विदिशा, डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, ब्र.केशरीचंदजी धवल आदि ने। फिर तो वहीं पढे विद्यार्थियों ने भी अपना जीवन संस्था की प्रगति में समर्पित कर दिया, जिनमें प्रमुख नाम हैं – ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री आदि।

आगे ...

अब समाज का वातावरण बदल रहा है। भौतिक व्यस्तताएं बढ गयी हैं, नई पीढी पाश्चात्य शैली को तेजी से अपना रही है। ऐसे माहौल में महाविद्यालय की देन सैंकड़ों शास्त्रियों का उपयोग यदि सही दिशा में नहीं हुआ तो समाज की दशा बदलते देर नहीं लगेगी। डॉ. भारिल्ल के अथक श्रम से आज समाज को सैंकड़ों शास्त्री तो मिल गये हैं, अब विचारणीय यह है कि क्या समाज में उतने गोदिका हैं जो उन्हें आजीविका से निश्चिंत करके उनका उपयोग जिनवाणी की सेवा के रूप में कर सकें। खैर जो भी हो, मैं भावना भाता हूँ कि पंचम काल के अंत तक यह तत्त्वज्ञान की धारा अनवरत रूप से यूँ ही बहती रहे और जगत का अविनाशी कल्याण करती रहे।

– विपिन जैन शास्त्री, नागपुर

देखो, तत्त्वविचार की महिमा !

देखो, तत्त्वविचार की महिमा ! तत्त्वविचार रहित देवादिक की प्रतीति करे, बहुत शास्त्रों का अभ्यास करे, व्रतादिक पाले, तपश्चरण आदि करे, उसको तो सम्यक्त्व होने का अधिकार नहीं और तत्त्वविचार वाला इसके बिना भी सम्यक्त्व का अधिकारी होता है।

– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 260

कविता

– अनंत विश्वंभर, सेलू

उन्नीस सौ छयासठ के स्मारक टोडरमल
बतलाओ, अब तुम कैसे हो ?
जब जागा था भाव पुनीत निर्मल
भव्य जीव पूरणचंद गोदिकाजी का
रखी थी नींव निकटतम भव्य
पूज्य गुरुदेव कहान सदुपदेश से
सच्चे जौहरी थे, वे जयपुर के
हुकम से रत्न खोजे थे, समय तराशता गया उनको
आभा फैली दशों दिशाओं में
जयपुर भारत की शान है, दुनियां में
प्रतिमा संगमरमर की बनती है जहाँ
सैंकड़ों जिनालय हैं बने भारतभर के कोने-कोने में
उन कोनों-कोनों से सींचे है, भव्य जीव स्मारक ने
किए हैं पंचकल्याणकवत् संस्कार पाँच वर्ष शास्त्री के
अभिनन्दन है अभयभाईजी का वे बन गए प्रथम शास्त्रीगण
श्रावकाचार व शाकाहार का होता भारतभर में प्रचार
अशोक और आलोकजी का पथ
सत्साहित्य का शाकाहार रथ
खुलते नित नवीन रहस्य यहाँ
जिनवाणी के आन्दोलन में
नयचक्र जिनवर का और क्रमबद्धपर्याय हो
स्वर्णपुरी सोनगढ में भी चर्चा होती धर्म के दशलक्षण कृतियों की।
भरी सभा में पूज्य गुरुदेव गाते यश तरुण हुकमचंद का
पूरनचंद का भाग्य है जागा धागा हुकमचंद सा हाथ है लागा
भक्ति सरोवर है अब वहाँ बहता, अभयजी के अमृत गगरी से
हुआ पंचकल्याणक भारी, विराजे विदेहीनाथ जयपुर नगरी
सीमंधर के लघुनंदन कहान द्वारा
बजा पंचकल्याणक में पंच परमागमों का नगाड़ा
होता है आत्मा का उद्घोष कुन्दकुन्द अमृतचंद्र आदि से
गाथाएं गूंजती समय प्राभृत की नेमीचंदजी की गहरी शैली से
गोलियों के प्रत्युत्तर जो गालियों से भी नहीं देते
वह तुम हो, विज्ञापन की होड़ मची है जहाँ,
बस आतम आतम रटते वह तुम हो।
माँ जिनवाणी के सिंचन से
मूसलधारा तत्त्व की बरसाते वह तुम हो
प्रबल पुरुषार्थ से निज के
यश आयु बल पाया वह तुम हो
गहन अध्ययन कर जिनागम का भारत से
सात समुंदरों पार पहुंचा पाए वह तुम हो।
संशय विभ्रम तम हो जहाँ
फैलता शुद्धात्मप्रकाश है वहाँ
वहाँ सर्वज्ञसिद्धि के प्रखर उद्गाता तुम हो
विरोधों के झंझावातों में नहीं पुरुषार्थ खोते वह तुम हो।
वहाँ शुद्धात्म तलैय्या में स्वानुभूति के आराध्य तुम हो।
शांतरस की आशा तुम हो।
शांति के समयसार से संतुष्ट तुम हो।
वहाँ तत्त्वज्ञान की रुचि से अंतर शुचिता को पाएं तुम हो
कमल रत्न का स्नेह हो जहाँ,
अनुशासन व गुणमाला के स्वामी तुम हो
अध्यात्मरस से परमात्मपद के पदचारी तुम हो
अप्पा सो परमप्पा के अनुभव को लुटाते वह तुम हो
घर के भेदियों से संभलकर भी
विभीषण के अध्यात्मराम तुम हो।
मोह की चट्टानों से घिरे सुगम लघुतत्त्व स्फोट से तुम हो।
जहाँ मंशा हो ईंट से ईंट बजाने की
त्रिमूर्ति से ज्ञानतीर्थ के सर्जक तुम हो।
विरोधों के अपप्रचार की बूंदों से भी
नित नवनवीन बनते अनेकानेक ज्ञान निलय तुम हो।
भुज के भूकंपों में भी कल्याणकों के रत्न बरसाते वह तुम हो।
और क्या कहूँ शब्द ओछे पड़ने लगते हैं
हे असंभव असीमित कल्पनाओं के रत्नाकर !
हो रत्न जहाँ ओझल, वहाँ रत्नाकर से तुम हो।
बालुकामय प्रदेशों में तत्त्व सरोवर के सर्जक तुम हो
ज्ञानदिवाकर से तुम हो। ●

(पृष्ठ 4 का शेष...)

प्रश्न 4 : टिप्पणी दीजिये – (कोई 4) **(20)**

1. अरहंतादिक में पूज्यत्व का कारण
2. साधु का स्वरूप
3. नवीन श्रोता का स्वरूप
4. देवगति के दुःख
5. मिथ्याचारित्र का स्वरूप

प्रश्न 5 : लघु उत्तरीय प्रश्न (कोई 5) **(25)**

1. 'अरहंतादिक को पूजने से लौकिक प्रयोजन की सिद्धि नहीं होती है'- कथन को सिद्ध कीजिये।
2. आठों कर्मों में से किस कर्म का उदय नवीन कर्मबंध का कारण है और किस प्रकार ?
3. नोकर्म किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बताइये।
4. 'जीव अनादि से कर्मबंधन सहित है'- यह निर्णय करने की क्या आवश्यकता है ?
5. प्रयोजनभूत पदार्थ कौन-से हैं और क्यों ?
6. मिथ्यादर्शन के संयोग से ही मिथ्याज्ञान नाम पाता है तो एक मिथ्यादर्शन को ही संसार का कारण कहना था, मिथ्याज्ञान को अलग क्यों कहा?

प्रश्न 6 : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (कोई 1) **(10)**

1. चार प्रकार की इच्छा
2. मिथ्यादर्शन का स्वरूप

– संयोजक, पीयूष जैन, जयपुर

श्री समयसार विधान संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ गजपंथ फाउन्डेशन ट्रस्ट नासिक द्वारा दिनांक 10 व 11 दिसम्बर को नवनिर्मित संकुल श्री कुन्दकुन्द कहान भवन का भव्य उद्घाटन समारोह एवं श्री समयसार विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 10 दिसम्बर को प्रात:काल जिन-प्रक्षाल तथा श्रीजी, जिनवाणी व मंगल कलश शोभायात्रा, ध्वजारोहण, विधान मण्डप उद्घाटन एवं मंगल कलश स्थापना आदि कार्यक्रम हुये। तत्पश्चात् उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ, जिसका संचालन ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा किया गया। सभा के अध्यक्ष के रूप में श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई उपस्थित थे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री निमेषभाई शाह मुम्बई एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री चापसीभाई नंदु, ब्र.धन्यकुमारजी (अध्यक्ष एवं ट्रस्टीगण गजपंथ फाउन्डेशन ट्रस्ट) श्री राजेन्द्रभाई वाडीलाल गांधी उपस्थित थे। सभा के तुरन्त बाद कुन्दकुन्द कहान भवन का भव्य उद्घाटन श्री अनंतभाई शेठ परिवार एवं श्री निमेषभाई शाह परिवार, सप्त बलभद्र मुमुक्षु निवास का उद्घाटन श्री चापसीभाई नंदु परिवार, देशभूषण-कुलभूषण छात्रावास का उद्घाटन श्री विजयभाई जैन परिवार, सति चंदनबाला भोजनालय का उद्घाटन श्री सचिनभाई शाह परिवार, अनुभव कक्ष यात्री निवास तथा स्वानुभूति कक्ष यात्री निवासका उद्घाटन क्रमश: कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की ओर से एवं चंदनबेन एम जोबालिया परिवार की ओर से हुआ। सम्यग्दर्शन भवन एवं सम्यग्ज्ञान भवन तथा सम्यक् चारित्र भवनों का उद्घाटन क्रमश: श्री अजितभाई जैन परिवार बड़ौदा, श्री राजेन्द्रभाई गांधी परिवार एवं गर्जतो ज्ञायक परिवार द्वारा हुआ। अन्य सभी कक्षों का व्यक्तिगत उद्घाटन दानदातारों द्वारा संपन्न हुआ।

दिनांक 11 दिसम्बर को समयसार मंडल विधान ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ द्वारा संपन्न हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर एवं श्री हेमन्तजी शास्त्री तथा सभी ट्रस्टीगण के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

आवश्यक सूचना

जिनवाणी चैनल पर हर रविवार प्रात: 11 से 12 बजे तक ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा सूरत में हुए प्रवचनों का प्रसारण किया जायेगा। सभी साधर्मीजन लाभ लेवें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

आगामी कार्यक्रम...

करणानुयोग शिविर

सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका-लब्धिसार-क्षपणासार के आधार से
क्षपणासार शिविर

वक्ता - डॉ. उज्ज्वला शहा, दिनांक 11 से 15 फरवरी 2017 सायंकाल 5 बजे तक (प्रतिदिन 6 घंटे एवं अन्तिम दिन 4 घंटे)। आपके आगमन की पूर्व सूचना देवलाली/मुम्बई ऑफिस में अवश्य देवें।

आवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी।

'सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका-लब्धिसार,क्षपणासार' सभी साधर्मियों को पूर्व शिविरों में दिया गया था, वह अवश्य साथ लावें। यह शास्त्र देवलाली में सशुल्क उपलब्ध होगा। **संपर्क सूत्र -** दिनेशभाई शहा, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई-400022 टेलिफोन -022-24073581,

स्थान - कहान नगर, लाम रोड, देवलाली - 422401, टेलिफोन -0253-2491044 अथवा मुम्बई ऑफिस - 173/175, मुम्बादेवी रोड, मुम्बई-02, टेलिफोन-022-23425241

पाठकों से निवेदन

हमारे यहाँ से वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिका निकलती है, जिसके हजारों पाठक देश-विदेश में है। इसके कवर पृष्ठ पर प्रतिमाह अलग-अलग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों/मन्दिरों की फोटो प्रकाशित की जाती है। आपसे निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र की सुन्दतम आकर्षक फोटो (शिखर सहित) भेजें, ताकि हम समयानुसार उसे छाप सकें। मन्दिर का फोटो डाक द्वारा निम्न पते पर या सॉफ्टकॉपी ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। **पता -** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-mail - ptstjaipur@yahoo.com

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com